अमृत वाणी

अच्छे व्यवहार छोटे छोटे त्याग से बनते हैं।

- एमर्सन

संपादकीय

कुपवाड़ा में आतंकवादी ठिकाने का भंडाफोड़

जम्मू कश्मीर के सीमावर्ती जिले कुपवाड़ा में सुरक्षाबलों व्दारा एक आतंकवादी ठिकाने का भंडाफोड़ कर हथियारों और गोला बारुद का जो बड़ा जखीरा बरामद किया है उससे यह साफ संकेत मिलता है कि आतंकवादी संगठन कश्मीर में किसी बड़ी घटना को अंजाम देने लंबे समय से ऐसी तैयारी में थे जिसकी किसी को भनक तक नही मिल पायी थी। पहलगांव घटना के बाद वे जान बचाकर भागे तो हैं लेकिन उन्हें इस बात का अंदाजा नही रहा होगा कि सुरक्षा बलों व्दारा इस तरह की भारी चोट भी उन्हें पहुंचाई जा सकती है। वैसे भी घटना के बाद से सुरक्षा बल जिस तरह आक्रामक मुड में हैं उससे आज नहीं तो कल उन्हें अपने किए की सजा तो मिलकर ही रहेगी। प्रधानमंत्री मोदी का यह ऐलान तो उन्हें कदापि हल्के में नही लेना चाहिए कि आखिरी छोर तक उन्हें नहीं बख्शा जाएगा। इसका प्रभाव भी क्रमशः नजर आने लगा है।

जैसा कि सर्वज्ञात है पर्यटकों पर हमला करने आए आतंकियों में दो के स्थानीय होने की आशंका जताई गई है और हाल में इन दोनों के ही घर जमींदोज कर दिये गए हैं। अर्थात इस जघन्य हमले में शामिल तत्वों को चारों ओर से नेस्तनाबुद किए जाने की योजना को लेकर सरकार चल रही है। इसलिए आज नहीं तो कल इन्हें किए की सजा तो मिलेगी ही पर तब तक ये लोग चारों ओर से बरबाद हो जाएंगे।

हथियारों और गोलाबारुद का जो जखीरा कुपवाड़ा में मिला है उसके बाद इस बात का अंदेशा भी अवश्य होगा कि घाटी में और भी ऐसे हथियार और गोलाबारुद छिपाए रखने के गुप्त स्थान होंगे। इसलिए सुरक्षा बलों की पैनी नजर इस खोज में तो अवश्य लगी होगी। इस बीच घाटी में जगह जगह मुठभेड़ में कतिपय आतंकियों के मारे जाने की खबर भी आ रही है।

सबसे बड़ी खबर तो यह है कि स्वयं आतंकियों के आका पाकिस्तान अब घुटनों पर आ गया है पहलगांव घटना के खिलाफ भारत व्दारा लगाए गए सख्त प्रतिबंधों से बुरी तरह तिलमिलाकर अब तक वह तरह तरह की प्रतिक्रियाएं व्यक्त करता रहा है। यहां तक कि गीदड़ धमकी तक देने लगा था लेकिन जब उसे लगा कि इससे कुछ होने वाला नही और सिंधु जल समझौता निलंबित होने जैसा खतरा उसके सर पर तलवार जैसे लटक रहा है अतः अब घुटनों पर आकर पाकिस्तान कहने लगा है कि वह पहलगांव घटना की जांच में पूर्ण सहयोग करने को तैयार है क्योंकि उसका इस मामले से कोई संबध्दता नहीं है।

अब देखना यह होगा कि भारत सरकार इस पर क्या रुख अपनाती है लेकिन अब तक मामले को लेकर सरकार की सख्ती बरकरार है। सभी राज्यों को पाकिस्तानी नागरिकों को तत्काल वापस भेजने हेतु निर्देशित किया गया है। यह तो अवश्य है कि इससे कई शांतिप्रिय नागरिकों पर भी कहर बरपा है पर इसमें हो भी क्या सकता है क्योंकि गेहूं के साथ घुन का पिसना तो नियति है।

जो भी हो, इस समय सबसे बड़ी बात यह है कि पहलगांव में निर्दोष पर्यटकों के साथ घटित बर्बर घटना ने जो दर्द भारत को दिया है उसके आगे हर सजा, हर कार्यवाही कम ही नजर आती है। आने वाला समय ही बताएगा कि इस नृशंस घटना में शामिल होने की संबध्द लोगों को क्या कीमत चुकानी पड़ती है।

मजदूर दिवस पर विशेष

आखिर कब तक मजबूर रहेगा मजदूर

श्रमिक अपना श्रम बेचकर न्यूनतम वेतन प्राप्त करता है। यही कारण है कि पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया जाता है। इसलिए यह दिन अंतरराष्ट्रीय श्रमिक संघों को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने के लिए है। इस प्रकार यह समाज में उनके योगदान की सराहना करने और उसे पहचानने का एक विशेष दिन हैं। भारत सहित दुनिया के बहुत से देशों में एक मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है। जिसका मुख्य उद्देश्य उस दिन मजदूरों की भलाई के लिए काम करने व मजदूरों में उनके अधिकारों के प्रति जागृति लाना होता है। मगर आज तक तो कहीं ऐसा हो नहीं पाया है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति करने का प्रमुख भार मजदूर वर्ग के कंधों पर ही होता है। मजदूर वर्ग की कड़ी मेहनत के बल पर ही राष्ट्र तरक्की करता है लेकिन भारत का श्रमिक वर्ग श्रम कल्याण सुविधाओं के लिए आज भी तरस रहा है। हमारे देश में मजदूरों का शोषण आज भी जारी है। समय बीतने के साथ मजदूर दिवस को लेकर श्रमिक तबके में अब कोई खास उत्साह नहीं रह गया है। बढ़ती महंगाई और पारिवारिक जिम्मेदारियों ने भी मजदूरों के उत्साह का कम कर दिया है। अब मजदूर दिवस इनके लिए सिर्फ कागजी रस्म बनकर रह गया है।

मजदूर दिवस दुनिया के सभी कामगारों, श्रमिकों को समर्पित होता है। इस बार की अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस 2025 की थीम है सामाजिक न्याय और सभी के लिए सभ्य कार्य। इसके अलावा भी कई बिंदुओं को रखा गया है। इस थीम का उद्देश है मज़दूरों की गरिमा का ख्याल रखना और उन्हें शांतिपूर्ण कामकाजी वातावरण प्रदान करना।

महात्मा गांधी ने कहा था कि किसी देश की तरक्की उस देश के कामगारों और किसानों पर निर्भर करती है। उद्योगपति खुद को मालिक समझने की बजाय अपने.आप को ट्रस्टी समझे। मगर ऐसा होता नहीं है। मालिक आज भी मालिक बने हुये हैं। मजदूर सिर्फ मजबूर होकर रह गया है। इसी कारण भारत में मजदूरों की स्थिति बेहतर नहीं है। हमारे देश की सरकार भी मजदूर हितों के लिए बहुत बातें करती है। बहुत सी योजनाएं व कानून बनाती है। मगर जब उनको अमलीजामा पहनाने का समय आता है तो सब इधर.उधर ताकने लग जाते हैं। मजदूर फिर बेचारा मजबूर बनकर रह जाता है।

गुरु नानक देव जी ने भी अपने समय में किसानों मजदूरों और कामगारों के हक में आवाज उठाई थी। गुरु नानक देव जी ने ष्काम करना, नाम जपना बांट छकना और दसवंध निकालना का संदेश दिया था। गरीब मजदूर और कामगार का विनम्रता का राज स्थापित करने के लिए मनमुख से गुरमुख तक की यात्रा करने का संदेश दिया था।

मजदूर एक ऐसा शब्द है जिसके बोलने में ही मजबूरी झलकती है। सबसे अधिक मेहनत करने वाला मजदूर आज भी सबसे अधिक बदहाल स्थिति में है। दुनिया में एक भी ऐसा देश नहीं है जहां मजदूरों की स्थिति में सुधार हो पाया है। दुनिया के सभी देशों की सरकार मजदूरों के हित के लिए बातें तो बहुत बड़ी.बड़ी करती हैं मगर जब उनकी भलाई के लिए कुछ करने का समय आता है तो सभी पीछे हट जाती है। इसीलिए मजदूरों की स्थिति में सुधार नहीं हो पाता है।

भारत में एक मई का दिवस सबसे पहले चेन्नई में एक मई 1923 को मद्रास दिवस के तौर पर मनाना शुरू किया गया था। इस की शुरुआत भारती मजदूर किसान पार्टी के नेता कामरेड सिंगारावेलू चेट्यार ने शुरू की थी। भारत में मद्रास के हाईकोर्ट सामने एक बड़ा प्रदर्शन किया और एक संकल्प के पास करके यह सहमति बनाई गई कि इस दिवस को भारत में भी कामगार दिवस के तौर पर मनाया जाये और इस दिन छुट्टी का ऐलान किया जाये। वर्तमान में भारत समेत लगभग 80 मुल्कों में पहली मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है।

हमारे देश केमजदूरों को न तो मालिकों द्वारा किए गए कार्य की पूरी मजदूरी दी जाती है और ना ही अन्य वांछित सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाती है। गांव में खेती के प्रति लोगों का रुझान कम हो रहा है। इस कारण बड़ी संख्या में लोग मजदूरी करने के लिए शहरों की तरफ पलायन कर जाते हैं। जहां ना उनके रहने की कोई सही व्यवस्था होती है ही उनको कोई ढंग का काम मिल पाता है मगर आर्थिक कमजोरी के चलते शहरों में रहने वाले मजदूर वर्ग जैसे तैसे कर वहां अपना गुजर.बसर करते हैं।

बड़े शहरों में झोंपड़ पट्टी बस्तियों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। जहां रहने वाले लोगों को कैसी विषम परिस्थितियों का सामना करता है। इसको देखने की न तो सरकार को फुर्सत है ना हीं किसी राजनीतिक दलों के नेताओं को। झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले मजदूरों को शौचालय जाने के लिए भी घंटों लाइनों में खड़ा रहना पड़ता है। झोपड़ पट्टी बस्तियों में ना रोशनी की सुविधा रहती है। ना पीने को साफपानी मिलता है और ना ही स्वच्छ वातावरण। शहर के किसी गंदे नाले के आसपास बसने वाली झोपड़ पट्टियों में रहने वाले गरीब तबके के मजदूर कैसा नारकीय जीवन गुजारते हैं। उसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है। मगर इसको अपनी नियति मान कर पूरी मेहनत से अपने मालिकों के यहां काम करने वाले मजदूरों के प्रति मालिकों के मन में जरा भी सहानुभूति के भाव नहीं रहते हैं। उनसे 12.12 घंटे लगातार काम करवाया जाता है। घंटो धूप में खडे रहकर बड़ी बड़ी कोठियां बनाने वाले मजदूरों को एक छप्पर तक नसीब नही हो पाता है।

हमारे देश में आज सबसे ज्यादा कोई प्रताड़ित व उपेक्षित है तो वो मजदूर वर्ग है। मजदूरो की सुनने वाला देश में कोई नहीं हैं।

कारखानो में काम करने वाले मजदूरो पर हर वक्त इस बात की तलवार लटकती रहती है कि ना जाने कब मालिक उनकी छटनी कर काम से हटा दे। कारखानो में कार्यरत मजदूरों से निर्धारित समय से अधिक काम लिया जाता है। विरोध करने पर काम से हटाने की धमकी दी जाती है। मजबूरी में मजदूर कारखाने के मालिक की शर्तों पर काम करने को मजबूर होता है। कारखानो में श्रम विभाग के मापदण्डो के अनुसार किसी भी तरह की कोई सुविधायें नहीं दी जाती है।

कई कारखानों में तो मजदूरों से खतरनाक काम करवाया जाता है जिस कारण उनको कई प्रकार की बीमारियां लग जाती है। कारखानों में मजदूरो को पर्याप्त चिकित्सा सुविधाएं पीने का साफ पानी विश्राम की सुविधा तक उपलब्ध नहीं करवायी जाती है। मालिकों द्वारा निरंतर मजदूरों का शोषण किया जाता है। मगर मजदूरों के हितों की रक्षा के लिये बनी मजदूर यूनियनो को मजदूरो की बजाय मालिको की ज्यादा चिंता रहती है। हालांकि कुछ मजदूर यूनियने अपना फर्ज भी निभाती है मगर उनकी संख्या कम है।

हमारे देश का मजदूर दिन प्रतिदिन और अधिक गरीब होता जा रहा है। दिन रात रोजी.रोटी के जुगाड़ में जद्दोजहद करने वाले मजदूर को तो दो जून की रोटी मिल जाए तो मानों सब कुछ मिल गया। आजादी के इतने सालो में भले ही देश में बहुत कुछ बदल गया होगा। लेकिन मजदूरों के हालात तो आज भी नहीं बदले हैं तो फिर श्रमिक वर्ग किस लिये मजदूर दिवस मनाये।

हर बार मजदूर दिवस के अवसर पर सरकारे मजदूरो के हित की योजनाओं के बड़े.बड़े विज्ञापन जारी करती है। जिनमें मजदूरों के हितों की बहुत सी बाते लिखी होती हैं। किन्तु उनमें से अमल किसी बात पर नहीं हो पाता है। देश में सभी राजनीतिक दलों ने अपने यहां मजदूर संगठन बना रखे हैं। सभी दल दावा करते हैं कि उनका दल मजदूरो के भले के लिये काम करता है। मगर ये सिर्फ कहने सुनने में ही अच्छा लगता है हकीकत इससे कहीं उलटी हैं।

रमेश सर्राफ धमोरा

(ये लेखक के अपने विचार है)

क्या भारत, पाकिस्तान के खिलाफ वाटर बम्ब इस्तेमाल करेगा

एशियन स्टडी फॉर वॉटर मैनेजमेंट की प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत, पाकिस्तान के खिलाफ वाटर बार खड़ा कर सकता है।यह रिपोर्ट इस समय प्रकाशित हुई है जब भारत ने इंडस वैली ट्रीटी रद्द करने की घोषणा की है। उल्लेखनीय है कि भारत और पाकिस्तान के बीच 22 अप्रैल की आतंकी घटना के बाद भीषण विवाद हो गया है।इस हादसे में 25 निर्दोष पर्यटक की गोली मारकर हत्या कर दी गई है। लश्कर ए तैयबा के टीआरएफ नामक संगठन ने जिम्मेदारी ली है। भारत ने सीसीएस की बैठक में पाकिस्तान के खिलाफ कई कदम उठाए हैं जिनमें एक इंडस वैली ट्रीटी को रद्द कर दिया है।यह संधि 1960, में विश्व बैंक के अनुरोध पर पाकिस्तान को रावी व्यास सतलुज, चिनाव झेलम सिंध नदियों का जल उपलब्ध कराने के लिए की गई थी। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के मुताबिक भारत सरकार ने केंद्रीय जल आयोग के इंजीनियरों को तुरंत सर्वे रिपोर्ट पेश करने के लिए कहा है कि अगर सिंधु जल को पाकिस्तान जाने से रोकना हो तो किस प्रकार के निर्माण की जरूरत होगी। क्योंकि इन नदियों पर हाइड्रल पावर स्टेशन तो हैं लेकिन जल भराव क्षमता कितनी है और उसे अपग्रेड करने के लिए कौन कौन सी जगह बांध बनाने पड़ेंगे। केंदीय वाटर रिसोर्स मंत्रालय,को भी सक्रिय किया गया है। सेंटर फॉर इंडियन ओसियन वाटर मैनेजमेंट पुणे के डायरेक्टर डॉ भूले को दिल्ली तलब किया गया है।कुल मिलाकर मोदी सरकार ने पाकिस्तान को वाटर बॉम्ब के जरिए सबक सिखाने की ठान ली है। जानकारी के अनुसार पानी को रोकना या एक दम छोड़ देना भी एक तरह का हथियार है। रावी व्यास सतलुज नदियों में पानी का प्रवाह काफी तेज होता है क्योंकि ये नदियां काफी ऊंचाई से गिरती हैं। पाकिस्तान में पिछले 70 वर्षों में कैनाल सिस्टम बना है तो इनका पानी नहरों में बह कर सिंचाई परियोजना के काम आता है। ब्रिटिश ने भी आजादी से पहले कुछ नहरें लाहौर, पेशावर, कराची में बनाई थी बाद में इनका विस्तार भी हुआ है। लेकिन अगर भारत की ओर से पानी अचानक छोड़ा गया तो पाकिस्तान में तबाही तय है। **अजय दीक्षित**

(ये लेखक के अपने विचार है)

वर्ग पहेली 5717

संकेतः बाएं से दाएं
1. 3 जून 1918 को मध्यप्रदेश में यहां गांधीजी की अध्यक्षता में हिंदी साहित्य सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें पारि प्रस्ताव द्वारा हिंदी राजभाषा मानी गई (3)
4. ये यूनानी दर्शनिक जो प्लेटो के गुरू थे (4)
8. पत्रे की चौड़ाई में विभाग, स्तंभ (3)
9. दंत पंक्तियों वाली लोहे की चौकोर कंघी, अरहर के डंठलों की झाड़ू (4)
10. मनोयोग से काम में लगा हुआ (2)
11. जो रिश्ते में पिता का पिता हो (2)
12. सहयोग, मदद, इमदाद (4)
14. एक भूमिगत तना जो औषधि और मसाले में प्रयक्त होता है (4)
16. भूलना, भूला देना (4)
17. कुल, सारा, समाप्त (3)
18. यह इंद्र का सारथि था कहते हे राम रावण के युद्ध में यही श्रीराम का सारथि था (3)
19. यह जंबू द्वीप के अरबखंड में स्थित एक देश जो 1971 में स्वतंत्र हुआ (4)
20. विश्व की एक मात्र फिल्म जो एक पात्रीय थी (2)

ऊपर से नीचे
1. मना या वर्जित करने का भाव (3)
2. धन-संपत्ति, रूपया-पैसा (3)
3. तरंग, लहर-वेग एक बिलायती मदिरा (2)
4. सुखदेने वाला, सुखदाता (5)
5. टेक्स देने वाला, करदायक (4)
6. पथ, मार्ग, रास्ता (2)
7. करी से काट-छांट करना (4)
12. सर्वोच्च स्थान (3)
13. पराजित होना, शिकस्त खाना (3)
14. घर-गृहस्थी का सामान आदि (4)
15. इस देश का पूर्व में सोमाली लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में जाना जाता था (2)
17. वह वाद्य जिसमें तार लगे हो, वहीं (2)
18. प्रतिष्ठा, इज्जत, नापने की क्रिया (2)

वर्ग पहेली 5716 का हल

श्र	मे	व	ज	य	ते		गु
मि	ल	न		म	ह	सू	ल
क	न		ग	ज	रा		फा
	बै	रा	ग		न	सी	म
म	ठ		न	बी		प	
	ना	का	म				गा
क		म	णि	र	ब	म	
वि	य	ना		तस		घा	ट

सुडोकू पहेली क्रमांक-5717

2	9			7	4			
	1					4		
6	7		9		5			
	8		2		6			
	6		8	4	7		2	
			5		1		8	
			7		8		9	2
		6					1	
			4	1			5	8

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5716

1	8	5	7	4	9	2	3	6
7	9	4	2	6	3	8	5	1
3	6	2	8	1	5	7	4	9
9	4	7	1	3	8	5	6	2
5	2	1	9	7	6	3	8	4
8	3	6	5	2	4	1	9	7
6	1	3	4	5	2	9	7	8
2	5	8	6	9	7	4	1	3
4	7	9	3	8	1	6	2	5